THE GILLETTE MARRIAGE



FERDINANDO FREGA

जिलेट विवाह

विवाह

जब वे चलते थे, तो पुरुष होने के बावजूद उनमें अब भी उस सेना अधिकारी की शालीनता और ठसक दिखाई देती थी जो वे कभी रह चुके थे, और साथ ही उस शिक्षा की झलक भी, जो उन्होंने बोर्डिंग स्कूल में पाई थी, जहाँ एक ही नियम चलता था: कम बोलो और सब कुछ सुनो।

1962 के उस अक्टूबर में वे सत्ताईस साल के थे, जब उन्होंने उस तंबाकू की दुकान में, जहाँ वे काम करते थे, उन्हें भीतर आते देखा और उसी पल मोहित हो गए।

लंबी, आकर्षक, शक्ल-सूरत से साफ़ तौर पर दक्षिण की, और उस शरारती नज़र के साथ, जो सिर्फ़ औरतें ही डालना जानती हैं। लेकिन वे सिर्फ़ सोलह साल की थीं। उनका नाम जोवान्ना था, पर परिवार में सबके लिए वे हमेशा जान्ना ही रहीं।

उन्होंने फ़ौरन उस ग्राहक से उनके बारे में पूछा: वे कौन थीं, उनका परिवार कौन-सा था, वे कहाँ की थीं। उनकी उम्र पर उन्होंने ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। उन बरसों में इस तरह की शादी को तीन बार आशीर्वाद मिलता था: परिवारों से, चर्च से और समाज से। इसे बेटियों का घर बसाने का तरीक़ा बताया जाता था, लेकिन असल में घर सिर्फ़ बेटों का बसता था।

उनके पिता रेलवे में काम करते थे। उनकी माँ का शहर में सिलाई का एक प्रतिष्ठित कारोबार था, जिसमें दर्ज़िनें काम करती थीं और जहाँ नामी परिवारों के लिए कपड़े तैयार होते थे, जो ऊँचे दर्जे की कारीगरी माँगते थे और उसके लिए दिल खोलकर पैसे देते थे।

जान्ना की एक और बहन थीं, फ़्रांचेस्का, जो उनसे लगभग दो साल बड़ी थीं। संतुलित और शांत, एक ऐसा गुण जो उनमें आज भी है।

जब तस्वीर पूरी हो गई, तो मेरे पिता ने उस ग्राहक से कहा कि वह उस परिवार से उनका परिचय करवा दे। वे मेरी माँ को अपनी पत्नी बनाना चाहते थे। वे उनसे

शादी करना चाहते थे। वे उन्हें चाहते थे।

और इस तरह, अप्रैल 1963 में, उनकी शादी हो गई।

जब भी वे अपनी सास के सामने अपनी पत्नी के गुणों की तारीफ़ करते, वे मुस्कुराकर कहतीं कि यह सच नहीं है, क्योंकि जान्ना एक अच्छी अभिनेत्री थी जो कभी इजाज़त नहीं माँगती थी। वह बस जो चाहती थी, ले लेती थी।

मेरे पिता को यह समझने में तीन महीने से भी कम लगे कि वे उस लड़की को कभी गढ़ नहीं पाएँगे, न ही उसे अपनी कल्पना के साँचे में ढाल पाएँगे। वे बस साफ़ विचारों वाली एक औरत थीं, और यह बात उन्हें भी जताने में उन्होंने ज़रा देर नहीं लगाई।

एक दिन उन्होंने अपनी पत्नी के चेहरे पर थप्पड़ मार दिया। यह ऐसा बर्ताव था जिसे उस ज़माने में परिवार के भीतर मर्द का अधिकार माना जाता था।

लेकिन वे ज़रा भी विचलित नहीं हुईं।

वे बाहर निकलीं और छुरी-चाकू की एक दुकान पर गईं, जहाँ से उन्होंने मांस काटने वाला एक भारी छुरा और एक कसाई वाला चाकू ख़रीदा।

वे घर लौटीं, मेरे पिता की ओर देखा और बोलीं:

"अगर तुमने फिर कभी ऐसी कोशिश की, तो मैं रात में आकर तुम्हें मार डालूँगी।"

उनकी आवाज़ में न कोई नाटक था, न कोई झिझक। सिर्फ़ यक़ीन।

यह यक़ीन कि वे ऐसा कर गुज़रेंगी।

पंद्रह दिनों तक वे घर के भीतर ही एक अलग कमरे में ख़ुद को बंद करके सोए, और तभी बाहर निकले जब उन्हें पक्का हो गया कि ख़तरा टल चुका है।

और वह इकलौती मिसाल ही रही।

वे रेज्जो कैलाब्रिया से तीन सौ किलोमीटर दूर कोसेन्ज़ा चले गए।

उस समय कोई हाईवे नहीं था, और प्रांतीय सड़कों से होकर, छोटे-छोटे कस्बों के अंतहीन ट्रैफ़िक के बीच, सफ़र में लगभग छह घंटे लगते थे।

दो नज़रें।

तीन मिनट से भी कम।

एक भविष्य तय करने के लिए इतना काफ़ी था, एक ऐसे प्रेम के भीतर जो शारीरिक रूप से बासठ बरस चलने वाला था, लेकिन जो उनके किए हर काम में और हमारे भीतर, उनके बच्चों के भीतर, सदा अमर रहने वाला था।

कोसेन्ज़ा – 1963

उन्होंने कोर्सो इटालिया पर एक घर किराए पर लिया, जो शहर का एक केंद्रीय इलाक़ा था, जहाँ दुकानों और सार्वजनिक परिवहन की अच्छी सुविधा थी। लेकिन हनीमून ख़त्म होने के बाद, आम ज़िंदगी में लौटना एक ऐसा पड़ाव था जिसे कोई नहीं जानता था।

हर सोमवार मेरे पिता रात दो बजे घर से निकलते थे, ताकि सुबह आठ बजे एक दुकान के बाहर अपने पहले ग्राहक तक पहुँच सकें। वे तीन सौ किलोमीटर गाड़ी चलाते और फिर पूरे हफ़्ते, दिन-ब-दिन, घर के और क़रीब काम करते जाते, जब तक कि शुक्रवार की शाम उसे फिर से हासिल न कर लेते।

इस बीच, मेरी माँ की ख़ुशक़िस्मती थी कि उनकी मुलाक़ात नोरा फ़ोर्मिसानो से हुई, जो ठीक उनके घर के सामने रहती थीं, और दोनों सहेलियाँ बन गईं।

नोरा उनकी अपनी माँ की हमउम्र थीं और उनके लिए माँ जैसी बन गईं।

वे नेपल्स के एक कुलीन परिवार से थीं और गृह मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी से ब्याही थीं, जो उस इलाक़े में तैनात थे। उनके तीन बच्चे भी थे, जो मेरी माँ से बस थोड़े ही छोटे थे।

उन्हीं से मेरी माँ ने एक सुबह यह बात कबूल की कि उनके मासिक धर्म में एक अजीब-सी देरी हो रही है। वे हमेशा नियमित रही थीं।

जब मेरी माँ ने समझाया कि उन्हें समझ नहीं आ रहा कि उन्हें लगातार पेशाब जाने की ज़रूरत क्यों महसूस होती है, तो यह सुनकर नोरा ने उन्हें गले लगा लिया और कहा:

"मेरी बेटी, तुम गर्भवती हो।"

जब मेरे पिता घर आए, तो उन्होंने तय किया कि वे कुछ नहीं कहेंगी।

वे उनकी प्रतिक्रिया देखना चाहती थीं, लेकिन उन्हें बताने के लिए ईस्टर का इंतज़ार कर रही थीं।

और उन्होंने ठीक वैसा ही किया।

उन्होंने उन्हें उनका ईस्टर एग थमाया और बोलीं:

"मैं गर्भवती हूँ। हमें रेज्जो कैलाब्रिया जाना होगा। मैं नहीं चाहती कि मेरा बच्चा यहाँ पैदा हो। मैं चाहती हूँ कि मेरा परिवार मेरे पास हो।"

तबादला इतना आसान नहीं था।

इसके लिए काम से जुड़े कारणों से कंपनी की मंज़ूरी ज़रूरी थी, और वह उसके बाद ही हो सकता था।

मेरे पिता ने सोचा कि वे कुछ समय और खींच लेंगे।

लेकिन दिसंबर 1963 में मेरी माँ एक बस में बैठीं और अकेले ही अपने माता-पिता के घर के लिए निकल पड़ीं, जहाँ 11 जनवरी 1964 को उन्होंने तेरेसा को जन्म दिया।

जब तेरेसा पैदा हुई और ख़बर परिवार में फैली, तो रिश्तेदार उनसे मिलने आने से पहले हफ़्तों इंतज़ार करते रहे।

इससे एक औरत के रूप में उनके स्वाभिमान को चोट पहुँची और उन्होंने भविष्य को लेकर एक फ़ैसला कर लिया।

अपनी सास और ननद के साथ उनका रिश्ता फिर कभी पहले जैसा नहीं रहा।

गुस्सा बना रहा, उनकी आँखों के पीछे दबा हुआ।

इस बीच, तबादले की अर्ज़ी अपनी रफ़्तार से आगे बढ़ती रही, और मई 1964 में मेरे पिता को उनका दूसरा ईस्टर तोहफ़ा मिला।

मेरी माँ एक और बच्चे की उम्मीद से थीं।

रेज्जो कैलाब्रिया – 1964

सितंबर 1964 में आख़िरकार कंपनी का तबादला मंज़ूर हो गया और वे रेज्जो कैलाब्रिया चले गए।

लेकिन अपनी माँ के साथ जिस आदर्श रिश्ते की उन्हें उम्मीद थी, वह कभी बना ही नहीं। उनकी माँ दबंग स्वभाव की थीं और उन्होंने अपनी सत्ता या अपना अधिकार कभी किसी को नहीं सौंपा। उनके पिता ही अकेले ऐसे इंसान थे जो उन्हें लाड़-प्यार देते थे और उनकी हर ज़िद पूरी करते थे, और इसके बाद उन्होंने जो कुछ भी किया, वह सब उन्हीं पर निर्भर रहा।

21 फ़रवरी 1965 का दिन था।

फ़ुटबॉल का मैदान।

रेज्जीना बनाम कोसेन्ज़ा।

मेरे पिता और मेरे चाचा स्टैंड में बैठे थे, तभी उद्घोषक ने एलान किया कि किसी विंचेंज़ो फ्रेगा को एक ज़रूरी संदेश के लिए प्रवेश-द्वार पर बुलाया जा रहा है।

उन्हें लगा कि यह कोई मज़ाक़ है और वे अपनी जगह बैठे रहे।

फिर दूसरा एलान हुआ:

"विंचेंज़ो, हम मैच नहीं रोक सकते, और आपकी पत्नी का प्रसव भी नहीं रोक सकते। क्या आप घर जाने की ज़हमत उठाएँगे? आपका बेटा पैदा हो रहा है।"

सब हँस पड़े।

झेंपकर उन्होंने ऐसे जताया मानो जिस आदमी की बात हो रही है, वह वे हों ही नहीं।

मैं अपने पिता के आशीर्वाद के साथ दुनिया में आया।

"तुम्हें बेटा चाहिए था, और वह आ गया है। लेकिन यह तुम्हारी ज़िंदगी का क्रूस बनेगा।"

सबको फ़ौरन ख़बर दी गई, और वे ऐसे पहुँचे मानो तीन ज्ञानी पुरुष हों।

बेटे का जन्म एक ऐसी घटना माना जाता था जो परिवार के नाम के आगे बढ़ने की गारंटी देती थी, लेकिन किसी ने कभी रुककर यह नहीं सोचा कि औरत के

बिना मर्द अधूरा है।

अगले बासठ साल मैं यही समझाते हुए बिताने वाला था।

आख़िर, हँसिया-हथौड़े से तो क्रूस ही बेहतर है।

दो हज़ार साल पहले के अपने सहकर्मी को समझने और यह जानने के लिए कि ऊपर हालात कैसे होंगे, मुझे बस इतना ही चाहिए था।

रेज्जो कैलाब्रिया – 1965

जान्ना सिर्फ़ उन्नीस साल की हैं।

उनके दो बच्चे हैं, जिलेट में काम करने वाले पति हैं, और गृहिणी बनने की उनमें ज़रा भी इच्छा नहीं है।

घर के नियम पहले से तय हो चुके हैं।

तनख़्वाह और कंपनी की सारी सुविधाएँ उन्हीं के हाथों से होकर गुज़रती हैं।

मेरे पिता जिलेट से मिलने वाले ख़र्चों के भुगतान पर गुज़ारा करते हैं, क्योंकि वे हमेशा काम में लगे रहते हैं और कभी ख़ाली बैठकर अपने आंड नहीं खुजाते।

वे मुद्रा बाज़ारों पर नज़र रखने लगती हैं, क्योंकि हर महीने मेरे पिता इटली में कोई बिक्री प्रतियोगिता जीतते हैं और मिलान का मुख्यालय इनाम के तौर पर सोने की गिन्नियाँ भेजता है।

फिर सेल्स डायरेक्टर घर पर एक पूरा बेडरूम सेट भिजवा देते हैं।

असली बीच-वृक्ष की लकड़ी।

बिल्ट-इन पलंग।

गद्दे।

तकिए।

कंबल और रज़ाइयाँ।

गर्मियों की चादरें और सर्दियों की चादरें।

हर चीज़ एक अनोखी शैली में डिज़ाइन की गई है, जो जब भी यह क़िस्सा सुनाया जाता है, लोगों को अवाक कर देती है।

लेकिन वे डरी हुई हैं।

उन्हें स्थिरता नहीं दिखती।

और कौन उन्हें दोष दे सकता है?

शुक्रवार की शाम, जैसे ही मेरे पिता दरवाज़े से भीतर आते हैं, वे कहती हैं:

"मेरे दो बच्चे हैं। मुझे नई कार चाहिए।"

"लेकिन तुम्हारे पास ड्राइविंग लाइसेंस नहीं है। तुम उसे चलाओगी कैसे?"

"कल तुम मेरे लिए नई कार ख़रीदने जा रहे हो। मुझे सिम्का 1000 चाहिए। पाँच दरवाज़ों वाली।"

उन्हें कोई नहीं रोक सकता था।

अगर किसी ने कोशिश की होती, तो ज़िंदगी जीता-जागता नरक बन जाती।

सबसे अच्छा उपाय यही था कि अगले दिन डीलर के यहाँ जाया जाए, अठारह लाख लीरा का चेक काटा जाए, बीमा करवाया जाए और चाबियाँ थमा दी जाएँ।

यह सही फ़ैसला साबित हुआ।

बारह दिन बाद उनके पास ड्राइविंग लाइसेंस था।

यह किसी को कभी पता नहीं चला कि उन्होंने यह कैसे कर दिखाया।

इस बीच, जिन जगहों में उनकी माँ का सिलाई का कारोबार चलता था, वे सब उनके पिता की ही संपत्ति थीं।

अपनी चहेती बेटी के आगे वे कमज़ोर पड़ जाते थे।

बस कुछ ही मिनट लगे।

"पापा, माँ की सिलाई की दुकान में मेरे लिए जगह बनाइए। छह महीने के अंदर मैं ऊन और सिलाई के सामान की दुकान खोल रही हूँ।"

दोनों के बीच बात पक्की हो गई।

बस कुछ ही चालों में मेरे नाना ने अपनी पत्नी को एक अलग जगह में शिफ़्ट कर दिया और अपनी बेटी को दो स्वतंत्र दुकानें दे दीं।

वे घर गईं और मेरे पिता से कहा कि उन्हें तीस लाख लीरा चाहिए।

और यह भी कि वे यह पैसा अपने माता-पिता से इस बहाने माँगें कि उन दोनों को एक घर ख़रीदना है।

मेरे पिता इस खेल में शामिल हो गए।

पैसा आ गया।

और दुकान के ऊपर बोर्ड भी:

LANA BBB DI GENNY

लेकिन उन्हें नगरपालिका का व्यापार लाइसेंस भी चाहिए था, और वह उनके पास नहीं था।

1960 के दशक के अंत तक नौकरशाही को कुशल तो शायद ही कहा जा सकता था।

वह एक सुरंग थी जो राजनीति के भीतर बसती थी और राजनीति के रास्ते ही चलती थी।

उस सोमवार की सुबह उन्होंने मेरे पिता से कहा कि वे एक दिन की छुट्टी लें और हमारे साथ घर पर रहें।

फिर वे निकल गईं।

जैसे रेगिस्तान पर बहती हवा।

तुम उसे चलते हुए महसूस करते हो, पर तुम्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं होता कि वह आख़िर किस जहन्नुम से आई है।

वे नगरपालिका पहुँचीं।

वहाँ उनका सामना एक क्लर्क से हुआ, जो लाइसेंस माँगने पर लगभग उन पर हँसने ही वाला था।

किसी को कुछ समझ आता, उससे पहले ही वे उसे जैकेट के कॉलर से पकड़ चुकी थीं, काउंटर की खिड़की से उसे आधा बाहर घसीट चुकी थीं, और पाँच लोग उन्हें उससे छुड़ाने की कोशिश कर रहे थे।

इसी बीच संयोग से मेयर वहाँ से गुज़रे।

उनका नाम पिएत्रो बत्ताल्या था।

बाद में वे कई कार्यकालों तक इतालवी संसद के सदस्य रहे।

उन्होंने यह दृश्य देखा, मेरी माँ की बाँह थामी और उन्हें अपने दफ़्तर में बुला लिया।

दस मिनट बाद वे हाथ में टेबल XV का व्यापारिक लाइसेंस लिए बाहर निकलीं।

स्पष्ट कर दूँ, यह वह लाइसेंस था जो इटली में हाइपरमार्केट खोलने के लिए ज़रूरी होता था — सबसे ऊँचे स्तर का, जिसे राजनीतिक संपर्कों के बिना हासिल करना आमतौर पर नामुमकिन था।

कारोबार चल निकला।

बाहर बिक्री प्रतिनिधियों की कतारें लगने लगीं।

आख़िरकार एक सहकर्मी ने मेरे पिता से कहा:

“पता है, रेज्जो कैलाब्रिया में एक दुकानदार औरत है जो हर बिक्री प्रतिनिधि की नाक में दम कर देती है।”

और मेरे पिता ने जवाब दिया:

“हाँ, जानता हूँ। बहुत लोगों ने मुझे उसके बारे में बताया है।”

लेकिन उन्होंने कभी यह नहीं बताया कि वह औरत उनकी पत्नी है।

दुकान की अपनी एक अलग ज़िंदगी बन गई।

शहर के हर कोने से लोग वहाँ ख़रीदारी करने आते थे।

वह औरत जो मर्दों को कॉलर से पकड़कर दीवार से दे मारती थी।

चाहे वे सरकारी कर्मचारी हों या माफ़िया के लोग, इससे कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ता था।

उनका नाम पूरे शहर में गूँजता था।

जिलेट मैन की पत्नी।

नियंत्रण

एक सुबह शहर की एक चौड़ी सड़क पर एक ट्रक ड्राइवर ने लापरवाही से गाड़ी घुमाई।

ट्रक ने मेरी माँ की कार के दरवाज़े को चपेट में लिया और उसे उखाड़ डाला।

उनके हॉर्न बजाने का कोई असर नहीं हुआ।

ड्राइवर को पता ही नहीं चला कि क्या हुआ है, और वह अपने रास्ते बढ़ता रहा, जबकि कार को काफ़ी नुक़सान हो रहा था।

आख़िरकार वह रुका और सड़क पर उतरकर चिल्लाने लगा कि इन कमबख़्त औरतों को गाड़ी चलाना नहीं आता।

उसने ऊँची आवाज़ में ऐलान किया कि औरतों के लिए बेहतर यही है कि घर बैठें और बच्चे पालें।

फिर स्टीयरिंग के पीछे बैठी मेरी माँ को सीधे घूरते हुए उसने किसी माफ़िया वाले के अंदाज़ में उन पर गालियाँ और धमकियाँ बरसाईं।

पिछली सीट पर मेरी बहन थी, चार साल की, और मैं, तीन साल का।

उन्होंने हमसे कहा कि हिलना मत।

कि वे अभी लौट आएँगी।

बाहर ठीक-ठीक क्या हुआ, यह हमें कभी पता नहीं चला।

हम बस इतना जानते हैं कि आख़िर में वह माफ़िया वाला मेरी माँ के सामने घुटनों के बल बैठा था, उनका हाथ चूम रहा था और माफ़ी माँग रहा था।

उसके बाद के दिनों में दुकान पर ग्राहकों की संख्या असाधारण रूप से बढ़ गई।

इतने लोग दरवाज़े से अंदर आने लगे कि आख़िरकार मेरे पिता ने पूछ ही लिया कि क्या वे सही मुनाफ़ा जोड़कर दाम लगा रही हैं, या माल यूँ ही बाँटे जा रही हैं।

मेरे पिता घर पर बैठ भी नहीं पाए थे कि माँ बोलीं:

"कल फ़िएट की डीलरशिप पर जाओ और मेरे लिए एक सफ़ेद फ़िएट 124 स्पेशल ख़रीदो, 1400 इंजन, चार दरवाज़े।"

"लेकिन जान्ना," मेरे पिता ने जवाब दिया, "तुम्हें पता है वह कितने की आती है?"

"छत्तीस लाख पचास हज़ार लीरा। अभी तुम भर दो। सिम्का की मरम्मत तो हो ही नहीं सकती; जब उसके बीमे का पैसा आएगा, तब मैं तुम्हें लौटा दूँगी।"

इतना काफ़ी था।

बारह घंटे से भी कम समय में बिल्कुल नई कार बाहर खड़ी थी।

बस एक ही टिप्पणी हुई:

"लोग कहते हैं कि कैलाब्रिया में इस कार का इस्तेमाल डकैतियों में होता है, क्योंकि यह तेज़ है और इशारे पर चलती है। तुम्हें इसकी क्या ज़रूरत है?"

माँ ने गंभीरता से उनकी ओर देखा और जवाब दिया:

"देख लेना।"

और जब वे सुबह काम पर निकलते, माँ हमेशा पूछतीं:

"आज कहाँ जा रहे हो? दोपहर का खाना कहाँ खाओगे?"

वे जवाब देते कि शायद एक सौ बीस किलोमीटर दूर होंगे।

और हम तीनों अचानक वहीं पहुँच जाते।

उन्हें लगता था कि यह प्यार है।

माँ तो बस अपनी संपत्ति पर नज़र रख रही थीं।

फिर, कहीं आदत छूट न जाए, उन्होंने नियंत्रण की वही व्यवस्था मुझ पर आज़माने की कोशिश की।

हम दोनों में से कोई कभी नहीं जीता।

न वे।

न मैं।

उनका मानना था कि नियंत्रण चीज़ों से वंचित रखकर और मार-पीट से किया जाता है।

पहले तरीक़े का मुझ पर ख़ास असर नहीं होता था, क्योंकि मैं अपनी ज़रूरतें तुरंत किसी और चीज़ की ओर मोड़ लेता था, और इससे वे पागल हो जाती थीं।

दूसरा तो मुझे महसूस ही नहीं होता था।

मैं कोई प्रतिक्रिया नहीं करता था।

मैं रोता नहीं था।

मैं गाली नहीं देता था।

दर्द पर मेरा नियंत्रण था।

बरसों बाद, यही नियंत्रण मुझे दूसरी मुश्किलों से पार पाने में मदद करने वाला था।

वे हमेशा मानती रहीं कि हम दोनों एक जैसे हैं।

लेकिन उन्होंने यह कभी स्वीकार नहीं किया कि मेरा एक हिस्सा मेरे पिता का था।

और पिता तथ्यों के बल पर जीत गए।

और ख़ामोशी से।

फ़ील्ड

शुक्रवार शाम, हफ़्ते के बिक्री के आँकड़े जमा हो जाने के बाद, डिस्ट्रिक्ट मैनेजर के एक फ़ोन ने उन्हें सोच में डाल दिया: महामहिम, जिलेट इटली के सेल्स डायरेक्टर राफ़ाएले दी तुल्लियो, तीन दिन फ़ील्ड में उनके साथ बिताने वाले थे, और मुलाक़ात सोमवार सुबह 7:30 बजे रेज्जो कैलाब्रिया के होटल एक्सेलसियर में तय थी।

हफ़्ते के कार्यक्रम में पूरे शहर में ग्राहकों के यहाँ बिक्री के दौरे थे और आसपास के उपनगरों में कुछ मुलाक़ातें। चूँकि जुलाई का मध्य आ चुका था और सब जानते थे कि उस इलाक़े में कितनी गर्मी पड़ सकती है, मेरी माँ ने उनके बैग में एक दूसरी कमीज़ रख दी और कहा कि दोपहर के खाने से पहले तरोताज़ा होकर कपड़े बदल लेना अच्छा रहेगा।

वे पूरी वर्दी में मुलाक़ात पर पहुँचे: बेदाग़ नीला सूट, हल्की नीली कमीज़, टाई, और वह सारा सम्मान जो उस आदमी का हक़ था जिसने उन्हें नौकरी दी थी।

वह बेहद गर्म दिन था, और दोनों आदमी पसीने से तर-बतर हो गए। फिर भी दौरों के दौरान हर बातचीत का केंद्र बिक्री के आँकड़े नहीं थे। चर्चा इस बात के इर्द-गिर्द घूमती रही कि क्या वे ख़ुश हैं, अपने पारिवारिक जीवन के बारे में कैसा महसूस करते हैं, और कंपनी में किस तरह ढल रहे हैं।

अगले दिन मेरे पिता फ़ील्ड दौरे के दूसरे दिन के लिए लौटे। चाहे इसलिए कि वे स्थिति को ठीक से भाँप नहीं पाए, या इसलिए कि उन्हें अपने आँकड़ों पर ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा था, उनसे एक ग़लती हो गई। वे वही सूट पहनकर आए, जो सूख तो गया था, पर उस पर पिछले दिन के पसीने के निशान अब भी साफ़ दिख रहे थे।

दी तुल्लियो ने एक लंबे पल तक उन्हें देखा, कुछ नहीं कहा, और फिर उन्हें एक कैफ़े में बैठकर कॉफ़ी पीने के लिए बुलाया।

"विंचेंज़ो," उन्होंने कहा, "जिलेट ब्लेड नहीं बेचती। जिलेट भरोसा बेचती है। कोई आदमी हर सुबह अपने ही गले पर ब्लेड तभी रखेगा, जब उसे उस आदमी पर भरोसा होगा जिसने वह ब्लेड उसे बेचा। और भरोसे की शुरुआत एक साफ़ कमीज़ से होती है।"

मेरे पिता ने कोई जवाब नहीं दिया। वे समझ गए।

उस रात वे घर आए और मेरी माँ से कहा कि वे सही थीं। एक बार फिर।

उन्होंने वही ग़लती दोबारा कभी नहीं की।

तीसरे दिन दी तुल्लियो ने एक्सेलसियर के सामने उनसे हाथ मिलाया और कहा: "तुम बहुत आगे जाओगे। क्योंकि तुम सुनते हो।"

वह सबक परिवार की आचार-संहिता बन गया।

मेरी माँ हर उस चीज़ पर नियंत्रण रखती थीं जो दिखाई देती थी। लाइसेंस, दुकानें, गाड़ियाँ, पैसा।

मेरे पिता हर उस चीज़ पर नियंत्रण रखते थे जो दिखाई नहीं देती थी। मिसाल, ख़ामोशी, सहनशक्ति, बेदाग़ होकर सामने आने की वह गरिमा, तब भी जब तुम दो दिन से ख़ून-पसीना बहा रहे हो।

मुझे यह समझने में साठ साल लग गए कि विवाह यही होता है।

एक व्यक्ति, जो लाइसेंस पाने के लिए किसी क्लर्क का कॉलर पकड़ ले।

और दूसरा व्यक्ति, जो किसी सार्वजनिक शौचालय में अपनी कमीज़ बदल ले, ताकि उसकी कंपनी को उस पर शर्मिंदा न होना पड़े।

जिलेट विवाह

विवाह कोई वादा नहीं है। वह एक ब्लेड है।

अगर तुम उसे सावधानी से सँभालो, तो वह बासठ साल तक हर सुबह तुम्हें साफ़ शेव देता है।

अगर लापरवाही से सँभालो, तो वह तुम्हारा गला काट देता है।

मेरे पिता और मेरी माँ ने कभी एक-दूसरे को नहीं काटा।

उन्होंने बस दिन-ब-दिन यह सीखा कि ब्लेड को साथ मिलकर कैसे थामा जाए।

फर्दिनांदो फ्रेगा
जिलेट मैन ⚔️